IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवापूर्व प्रशिक्षण तथा सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली के प्रति विद्यार्थियों की राय का एक अध्ययन

[1]प्रकाश चंद्र उप्रेती एवं [2]दीपिका भट्ट

[1]शोधार्थी, बी०एड० विभाग, एम0बी0जी0पी0जी कॉलेज, हल्द्वानी ,कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

[2]शोधार्थी, बी०एड० विभाग, एम0बी0जी0पी0जी कॉलेज, हल्द्वानी ,कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

शोध सारांश– प्रस्तुत शोध कार्य उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवा पूर्व व सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली के प्रति विद्यार्थियों की राय को जानने के लिए किया गया है। उच्च शिक्षा में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने विषय के विशेषज्ञ हो,सिखाने के ज्ञान को व्यवहार में लाने, ज्ञान और ज्ञान मीमांसा बनाने तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षण शैलियों का प्रयोग करने में सक्षम हो। वर्तमान शोध में उत्तराखंड राज्य में स्थित कुमाऊं विश्वविद्यालय के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों जिन्होंने स्नातक,परास्नातक स्तर पर सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों तथा बी०एड०स्तर पर सेवा पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के सानिध्य में अध्ययन किया है, की दोनों प्रकार के शिक्षकों के शिक्षण शैली के प्रति राय को जानने का प्रयास किया गया है। उक्त शोध कार्य के लिए गुणात्मक शोध की कथात्मक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया तथा साक्षात्कार के माध्यम से आंकड़े प्राप्त किए गए। न्यादर्श के रूप में कुमाऊं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों में 132 प्रशिक्षणार्थियों का चुनाव उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन की विधि से किया गया तथा पाया कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण शैली के प्रति विद्यार्थियों की राय सकारात्मक है। एवं सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण शैली को विद्यार्थी प्रभावी शिक्षण शैली मानते हैं।

शब्द कुंजी– शिक्षण शैली, सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षक ,सेवारत प्रशिक्षित शिक्षक, विद्यार्थियों की राय।

प्रस्तावना– शिक्षा की विभिन्न श्रेणियां जैसे प्राथमिक ,माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक आदि में एक श्रेणी उच्च शिक्षा भी है। उच्च शिक्षा प्रणाली की शुरुआत यूरोप में हुई थी, जहां सबसे पहले विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर उच्च शिक्षा के महत्व को समझा जा सकता है। उच्च शिक्षा पूर्ण होने पर डिग्री, डिप्लोमा या प्रमाण पत्र प्राप्त होता है। उच्च अध्ययन के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों में विश्वविद्यालय, कॉलेज, केंपस आदि हैं, जिनमें कला, विज्ञान,मानविकी ,चिकित्सा, संगीत, सामाजिक विज्ञान आदि कई अन्य क्षेत्र शामिल हैं। उच्च शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने या अच्छी नौकरी पाने तक ही सीमित नहीं है, उच्च शिक्षा को व्यक्तित्व विकास के साधन के रूप में देखा जा सकता है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986** में उच्च शिक्षा के उद्देश्यों के विषय में कहा गया है, कि उच्च शिक्षा उच्च ज्ञान की प्राप्ति व नवीन ज्ञान की खोज, राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेषज्ञों की तैयारी, युवाओं में विस्तृत सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास और राष्ट्र के बहुमुखी विकास का साधन है। उच्च शिक्षा विद्यार्थी के लिए केवल धन कमाने का साधन नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक जागरण राष्ट्र की उन्नति का आधार है, जिससे विद्यार्थी अपने सिद्धांतों व विचारों का निर्माण करता है। इस स्तर पर शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सभी शैक्षिक गतिविधियों की आधारशिला शिक्षक है। उच्च शिक्षा के स्तर पर विभिन्न स्तरों से विद्यार्थी आते हैं तथा विभिन्न स्तरों से आने वाले छात्रों को पढ़ाने के लिए बहुस्तरीय शिक्षण शैली की आवश्यकता होती है। उच्च शिक्षा में शिक्षण भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है,साथ ही सभी शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है, कि वे विद्यार्थियों की सभी समस्याओं का निदान कर अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाएं। शिक्षकों की शिक्षण शैली विद्यार्थियों के सीखने को घनिष्ठ रूप से प्रभावित करती है शिक्षकों की शिक्षण शैलियां उनके व्यक्तित्व गुणों, व्यवहारों, विषय ज्ञान, कक्षा–कक्ष संचार आदि का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका सीखने की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। शिक्षण शैली को सामान्य अर्थ में शिक्षक के विद्यालय व्यवहार से लिया जाता है। विद्यालय या महाविद्यालय में शिक्षक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया या अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन में जो व्यवहार किया जाता है वह व्यवहार उसकी शिक्षण शिक्षण शैली में निहित होता है। शिक्षक के व्यवहार का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है, कि उसकी शिक्षण शैली के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष कौन–कौन से हैं? शिक्षण शैली को विद्वानों द्वारा निम्न रूप से परिभाषित किया गया है – **रेयान्स के अनुसार** "शिक्षण शैली से तात्पर्य व्यक्ति का उन सभी क्रियाओं एवं व्यवहारों से होता है, जो एक शिक्षक के करने योग्य मानी जाती हैं। विशेष रूप से वह क्रियाएं

जो दूसरे को सिखाने में निर्देश अथवा मार्गदर्शन का काम करती हैं"। **श्रीमती आर0के0 शर्मा के अनुसार** "शिक्षण शैली के अंतर्गत शिक्षण कार्य एवं अन्य क्रियाएं जोकि छात्र के सर्वांगीण विकास में योगदान करती है, को सम्मिलित किया जाता है। शिक्षकों को इन क्रियाओं में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग मिलता है, यह सहयोग ही शिक्षक के शिक्षण शैली को प्रदर्शित करता है"।

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि शिक्षण शैली व्यापक रूप से संपूर्ण विद्यालय, महाविद्यालय क्रियाकलापों से संबंधित होती है। तथा संकुचित रूप में इसका संबंध कक्षा–कक्ष शिक्षण से होता है। वर्तमान समय में इसके व्यापक स्वरूप को ही स्वीकार किया जाता है, क्योंकि संस्था व शिक्षक दोनों का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें कुशल नागरिक का निर्माण करना है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वह उत्तम विधियों प्रविधियों की सहायता से छात्रों के शिक्षा प्रदान करें। इन विभिन्न विधियों, प्रविधियों, शिक्षण शैलियों को शिक्षकों को सिखाने के लिए कई प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम सरकार व निजी प्रयासों द्वारा चलाए जाते हैं। उच्च शिक्षा क्योंकि राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला है ,उच्च शिक्षा में शिक्षण कौशलों को विकसित करने हेतु सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं, किंतु सेवा पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्यापक शिक्षा को छोड़कर अन्य सभी विषयों में इसका अभाव देखा गया है। प्रशिक्षण का शिक्षण व्यवसाय के साथ घनिष्ठ संबंध है क्योंकि प्रशिक्षक के माध्यम से ही शिक्षक कौशलों व शिक्षण शैलियों विकसित होती हैं **कोहेन व हिल (2000)** अनुदेशन विधि व कक्षा प्रदर्शन पर शोध किया और पाया कि शिक्षक विकास कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर कम से कम थोड़ा प्रभाव तो पड़ता ही है। **सैंस (2006)** ने सेवाकालीन प्रशिक्षण एवं सेवा पूर्व प्रशिक्षण के प्रभाव की जांच की लेकिन उन्हें इस बात का कोई पुख्ता प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ की सेवा पूर्ण प्रशिक्षण अधिगम से संबंधित है। **मोहम्मद,शाहिद फारुख एवं नीलम शहजादी (2006)** में गणित विषय में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया और पाया कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए छात्रों के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण अंतर है प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए छात्र उच्च उपलब्धि वाले थे। **हसन (2015)** ने लाहौर में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, किंतु शिक्षकों की दक्षता बढ़ाने के लिए समय–समय पर कार्यशाला आयोजित करने का सुझाव दिया। **मॉन सू हिन् (2018)** ने प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित सहायक अध्यापकों की शिक्षण शैली का अध्ययन किया और पाया कि व्यक्तिगत शैली व सूचना दाता शैली में महत्वपूर्ण अंतर है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में सेवा पूर्व प्रशिक्षित अध्यापक केवल शिक्षक शिक्षा में ही कार्यरत है। इसके अतिरिक्त सभी शिक्षक सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।यद्यपि सेवारत प्रशिक्षण के महत्व से भी इनकार नहीं किया जा सकता है, यह शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नवाचारों से शिक्षकों को समय–समय पर अपडेट करा कर शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाते हैं। किंतु शिक्षकों प्रशिक्षण से संबंधित कोई भी शोध कार्य अभी तक उच्च शिक्षा में इस दिशा में संपन्न नहीं किया गया है। इस शोध कार्य में शोधार्थी यह देखना चाहता है, कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित एवं सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैलियों के विषय में छात्रों की क्या राय है? क्योंकि संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र बिंदु शिक्षार्थी है एवं शिक्षार्थी के सीखने के लिए शिक्षक की शिक्षण शैली से संतुष्ट होना आवश्यक है।तभी अधिगम की प्रक्रिया सुचारू रूप से उत्तरोतर दिशा में प्रवाहमान हो सकती है।

अध्ययन का महत्व – वर्तमान समय में शिक्षा के मानकों में गुणात्मक सुधार सर्वोत्तम प्राथमिकता है। शिक्षण संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पक्ष है। और माना जाता है कि गुणात्मक शिक्षण के लिए एक अच्छी तरह से प्रेरित व प्रशिक्षित शिक्षकों को का होना आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और छात्रों के सकारात्मक परिणामों के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उचित प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण एवं शैलियों में सुधार करके ही प्राप्त की जा सकती है। शिक्षक शिक्षण शैली एक बहुआयामी रचना है, जो इस बात पर आधारित है कि शिक्षक कक्षा में कैसे कार्य करते हैं। वर्तमान अध्ययन उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवा पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त एवं सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैलियों के प्रति विद्यार्थियों की राय पर किया गया है। क्योंकि उच्च शिक्षा में केवल अध्यापक शिक्षा में ही सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षक, शिक्षक शिक्षा में कार्यरत होते हैं जो सेवा पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों बी०एड०,एम०एड० के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किए रहते हैं यद्यपि शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं शिक्षण आवश्यकताएं, सामान्य उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों से भिन्न है किंतु फिर भी शिक्षण शैलियों के परिपेक्ष में उच्च शिक्षा में कार्यरत सभी शिक्षकों से शिक्षण शैलियों में निपुणता की अपेक्षा की जाती है। इस शोध में विद्यार्थियों की राय का शिक्षकों की शिक्षण शैली के प्रति अध्ययन किया गया है। जिससे सेवा पूर्व प्रशिक्षित व सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली के सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष उजागर होंगे तथा शोध से प्राप्त सुझावों की सहायता से उन समस्याओं का निदान किया जा सकेगा, जो विद्यार्थियों के मध्य में उनके अधिगम को प्रभावित करने के कारण हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–

1) उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवा पूर्व प्रशिक्षित एवं सेवा कालीन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैलियों के प्रति छात्रों की राय का अध्ययन करना।

2) उच्च शिक्षा में कार्य सेवा पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैलियों के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न–

1) उच्च शिक्षा में सेवा पूर्व तथा सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के द्वारा शिक्षण शैलियों के प्रयोग में विद्यार्थियों की राय किस प्रकार की है?

शोध विधि–

वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने गुणात्मक अनुसंधान की कथात्मक विश्लेषण (NARRATIVE ANALYSIS) विधि का अनुसरण किया हैं।

जनसंख्या–प्रस्तुत शोध में जनसंख्या कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड उच्च शिक्षा में शिक्षण करने वाले सेवा पूर्व तथा सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक एवं ऐसे विद्यार्थी हैं, जिन्होंने सेवा पूर्व तथा सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त दोनों प्रकार के शिक्षकों के सानिध्य में अध्ययन किया है।

न्यादर्श–प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कुमाऊं विश्वविद्यालय के राजकीय एवं स्ववित्तपोषित बी०एड० कॉलेजों के 132 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श की उद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने उच्च शिक्षा में शिक्षकों की शिक्षण शैली के प्रति छात्रों की राय को मापने के लिए शोध उपकरण के रूप में असंरक्षित साक्षात्कार का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का विश्लेषण – कथात्मक विश्लेषण विधि का प्रयोग करते हुए प्राप्त साक्षात्कारों से कोडिंग की सहायता से संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान की गई। जो शिक्षकों की शिक्षण शैलियों से घनिष्ठ रूप से संबंधित थे। जिनमें शिक्षण विधियां, शैक्षिक वातावरण का निर्माण, सीखने के अधिक अवसर उपलब्ध कराना तथा छात्रों की सहभागिता, छात्र शिक्षक संबंध, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन, सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक जीवन से जोड़ने आदि के संबंध में सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुभव के सापेक्ष विद्यार्थियों के अभिमत प्राप्त हुए। जिनका विश्लेषण अग्रलिखित है –

शिक्षण विधियों का प्रयोग–

शिक्षण विधि शिक्षण –अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा में विद्यार्थी विभिन्न आवश्यकताओं वाले होते हैं। अतः उन्हें पढ़ाने के लिए शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों निपुण होना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में 98 उत्तरदाता मानते हैं कि सेवा पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग कर उन्हें पढ़ाते हैं, जबकि 34 उत्तरदाता ऐसे हैं, जिन्होंने शिक्षण विधियों के प्रयोग में सेवा पूर्व प्रशिक्षित व सेवारत प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा प्रयोग की गई शिक्षण विधियों में समानता को प्रस्तुत किया।

शैक्षिक वातावरण का निर्माण–

अध्ययन अध्यापन के लिए शैक्षिक वातावरण का होना आवश्यक है। शैक्षिक वातावरण के अभाव में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का प्रभावी होना संभव नहीं होता है प्रस्तुत शोध में 113 उत्तरदाता मानते हैं कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित अध्यापक एक उत्तम शैक्षिक वातावरण देने में समर्थ हैं। जबकि 19 उत्तरदाताओं ने दोनों प्रकार के शिक्षकों के शैक्षिक वातावरण को समान बताया तथा वे इससे कम संतुष्ट थे।

सीखने के अवसर एवं छात्र सहभागिता–

सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की सहभागिता तथा उन्हें सीखने के उचित अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत शोध में 119 उत्तरदाता मानते हैं कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा कक्षा में उन्हें अधिक अवसर व सहभागिता उपलब्ध कराई जाती है। इसके विपरीत उत्तरदाताओं ने माना कि सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के सानिध्य में अध्ययन करते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर कम उपलब्ध थे। जबकि 13 उत्तरदाता ऐसे हैं, जो मानते हैं कि दोनों ही शिक्षकों के मध्य उन्हें सीखने के कम अवसर उपलब्ध है।

छात्र –शिक्षक संबंध–

छात्र –शिक्षक संबंध के विषय में सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों के प्रति 105 उत्तरदाता मानते हैं कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षक अपने छात्रों से संबंध मधुर होते हैं। तथा उन्हें सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझ पाते हैं। 27 उत्तरदाताओं ने सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के छात्रों से संबंध को ठीक बताया। किंतु वे यह मानते हैं,कि छात्र –शिक्षक संबंध ठीक तो होते हैं, किंतु बच्चे शिक्षकों से अपनी समस्याओं को बताने में सहज नहीं होते हैं। या कभी कभी समस्या बताने पर उन्हें उसका सही निदान प्राप्त नहीं हुआ।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन–

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ किसी भी पाठ्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत शोध में इस विषय में सभी 132 उत्तरदाताओं ने इस बात पर सहमति प्रकट की थी सेवारत प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ना के बराबर आयोजन किया जाता है। शिक्षक केवल सैद्धांतिक ज्ञान को पढ़ाने तक ही सीमित होते हैं। जबकि सेवा पूर्व प्रशिक्षित अध्यापकों के सानिध्य में अध्ययन करते हुए उन्हें पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सम्मिलित होने के उचित अवसर प्रदान हुए हैं।

सैद्धांतिक व व्यवहारिक ज्ञान में समन्वय–

शिक्षा के किसी भी स्तर पर शिक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक जीवन से जोड़ना महत्वपूर्ण होता है। यह अधिगम को अधिक प्रभावी तथा उपयोगी बनाता है। प्रस्तुत शोध में इस विषय पर 92 उत्तरदाताओं ने माना कि सेवा पूर्व प्रशिक्षित अध्यापक सभी सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक ज्ञान से जोड़कर पढ़ाते हैं, जबकि 40 उत्तरदाता ने माना कि दोनों प्रकार के शिक्षकों ने सैद्धांतिक व व्यवहारिक ज्ञान के समन्वय में स्थापित किया है। किंतु अधिकतर उत्तरदाता इस बात से भी सहमत है, कि सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक सैद्धांतिक ज्ञान पर ही अधिक बल देते हैं।

शोध के परिणाम –उच्च शिक्षा में सेवा पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त एवं सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली के विषय में प्राप्त आंकड़ों से चयनित पक्ष शिक्षण विधियों का प्रयोग,अधिगम वातावरण का निर्माण ,सीखने के अवसर एवं छात्र सहभागिता, छात्र –शिक्षक संबंध,पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन, सैद्धांतिक व व्यवहारिक ज्ञान में समन्वय आदि सभी पक्षों के आधार पर विद्यार्थियों ने माना कि सेवा पूव प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक सभी उक्त पहलुओं में सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से अधिक उत्तम शिक्षण शैली का प्रयोग करते हैं।

शोध कार्य के निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक विचारकों, प्रशासकों, शिक्षकों नीति निर्माताओं के साथ–साथ सरकार व अन्य लोगों के लिए भी महत्व रखता है, जो शिक्षा के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। शिक्षकों की शिक्षण शैली शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है तथा विद्यार्थी जो शिक्षण द्वारा लाभान्वित होता है, ,उसके लिए महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध में शिक्षकों को शिक्षण शैली का मूल्यांकन विद्यार्थियों के अनुभव के आधार पर किया गया और पाया कि सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया के दौरान छात्रों के अनुभव अधिक अच्छे रहे तथा उनकी सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली प्रति सकारात्मक राय है।

शोध कार्य के शैक्षिक निहितार्थ– अनुसंधान के क्षेत्र में कोई भी शोध कार्य तब तक अर्थपूर्ण नहीं हो सकता जब तक उसे प्राप्त परिणामों के उपादेयता ना हो। शोध का प्रमुख उद्देश्य संबंधित क्षेत्रों में व्याप्त कमियों को दूर कर शैक्षिक व्यवस्थाओं को गुणात्मक उन्नयन की ओर ले जाना है। प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में निम्न प्रकार उपयोगी साबित होंगे–

शिक्षकों हेतु – अध्ययन से ज्ञात है कि सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण शैली के विषय में विद्यार्थियों की राय सकारात्मक नहीं है। विभिन्न चयनित पक्षों में विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान असहज महसूस करते हैं। सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी शिक्षण विधियों में सुधार करें विद्यार्थियों को अधिक सुसंगठित व सहयोगी शेक्षिक वातावरण प्रदान कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनकी सहभागिता को बढ़ाने की दिशा में कार्य करें।

शिक्षक– शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए– शिक्षक– शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए सुझाव यह है,कि वह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के साथ मिलकर सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों के लिए कम से कम 6 माह का ऐसा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएं। जिसमें शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग,शैक्षिक वातावरण का निर्माण, सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक जीवन से संबंधित करने तथा किशोरावस्था से प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करते विद्यार्थियों की समस्याओं को समझकर उनका का उचित प्रकार निदान कर सकें।

अकादमिक स्टाफ कॉलेज के लिए – उच्च शिक्षा में नवनियुक्त व्याख्याताओं को प्रशिक्षण के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जो अकादमिक स्टाफ कॉलेज के माध्यम से संचालित किए जाते हैं। अतः शोध के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार अकादमिक स्टाफ कॉलेज के लिए सुझाव यह है कि नवनियुक्त शिक्षकों के लिए एक नियत समय के लिए इंटर्नशिप जैसी व्यवस्था का आयोजन उच्च शिक्षा में भी किया जाए जिससे शिक्षकों की शिक्षण शैली से संबंधित विभिन्न पक्षों का विकास होगा तथा शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक उन्नयन होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

पाल हंसराज (2015) उच्च शिक्षा में अध्यापन एवं प्रशिक्षण की प्रविधियां, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ०–1–5.

Cohen, D.F., & Hill, H.C. (2000). Instructional policy and classroom performance: The Mathematics reform in California. Teachers' college Record, 102(2), 294-343.

Farooq, M.S., & Shahzadi, N. (2006). Effect of teachers' professional education on students' achievement in Mathematics. Bulletin of Education & Research. 28(1), 47-55.

Harris, D. N., & Sass, T.R. (2006), Teacher training, teacher quality and student achievement. Journal of Public Economics, 95(8), 798-812.

Hassan ,Syeda Mahnaz(2015), COMPARATIVE STUDY OF TEACHING EFFECTIVENESS OF TRAINED AND UNTRAINED TEACHERS AT SCHOOL LEVEL WORKING IN PRIVATE SECTOR, Sci.Int.(Lahore),27(2),1571-1577.

Mon Su Hnin and Thida Wai (2018), A STUDY OF THE TEACHING STYLES OF TRAINED AND UNTRAINED PRIMARY ASSISTANT TEACHERS, J. Myanmar Acad. Arts Sci. 2018Vol. XVI. No.9A.